शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

'पथिक' खण्डकाव्य

कवि – श्री राम नरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

लेखक नारी स्वतंत्रता के प्रति तुलसीदासजी के विचारों के सम्बन्ध में क्या कहना चाहता है।

उत्तर :- समाजवादी चिंतक डॉ० राम मनोहर लोहिया ने ~~मैं~~ गोस्वामी तुलसीदास के विचारों को बड़े ही प्रभावशाली रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। लेखक का कहना है कि नारी स्वतंत्रता और समानता के जितने जानदार कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं उतना ~~[illegible]~~ जानदार कवि खोजने से भी नहीं मिलेगा। उन्होंने नारी जाति को इतना ऊँचा उठाया है कि 'सियाराम मय सब जग जानी' जैसी उक्ति गढ़ डाली। यह अलग बात है कि हमारे यहाँ पुरुष मनोवृत्ति के पक्षपाती लोगों ने तुलसीदास जी की चौपाइयों का गलत अर्थ लगाकर नारियों को हीन बनाने की चेष्टा की है।

प्रश्न :- जाति-प्रथा के सम्बन्ध में लेखक के विचारों पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- शूद्र और पिछड़े वर्गों के लिए रामायण में आये हुए प्रसंग विवेक युक्त नहीं है। इसमें शूद्रों को हीन बताकर विप्रों को इतना ऊँचा उठाया गया है कि शूद्र और वनवासी एवं तद् नीचे गिर जाते हैं। लोहिया जी कि दृष्टि में राम चरितमानस का निषाद प्रसंग रामायण की जाति प्रथा के बीहड़ से निकलती हुई एक खूबसूरत पगडंडी है। कितनी समानता है निषाद भरत की मण्डली में। इस निषाद को राम और भरत दोनों ही गले लगाते हैं। डॉ० लोहिया जी का कहना है कि अब पालागी खतम कर गलमिलौवल ही होना चाहिए। यहाँ पर लेखक ने समस्त जाति-प्रथा के भेद-भाव को समाप्त कर दिया है। इसीलिए डॉ० लोहिया को महान समीक्षक माना गया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि मानव-मानव के प्रति किसी भी प्रकार का भेद करना एक सभ्य समाज के ~~[illegible]~~ लिए उचित नहीं है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय, पूर्णियाँ

08/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी
जयद्रथ-वध, काव्य खण्ड
कवि मैथिलीशरण गुप्त

लख प्राकृतिक छवि मार्ग में गिरि-वन-नदी-नभ की नयी,
विस्मित हुए अत्यन्त अर्जुन आत्म विस्मृति हो गयी।
उस काल उनका शोक भी चिन्ता सहित जाता रहा,
हो प्रेम से पुलकित उन्होंने यों रमापति से कहा-

भावार्थ

उत्तर:- भगवान शंकर के पास हिमालय पर्वत पर श्री कृष्ण अर्जुन को साथ लेकर जा रहे हैं। अर्जुन ने मार्ग में जो कुछ देखा उसी का वर्णन कवि अर्जुन के मुख से कराते हुए कहता है कि अर्जुन ने मार्ग में प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर काफी प्रसन्न है। पर्वत, वन, नदी और आकाश की शोभा प्रति पल नई-नई ही दिखलाई पड़ रही है। वह उस सौन्दर्य को देखकर बहुत ही विस्मय हुए और उस दृश्य में इतने लीन हो गये कि अपने आपको ही भुला बैठे। उस समय उनका समस्त दुःख भी चिन्ता के साथ समाप्त हो जाता है। तब उन्होंने प्रसन्न होकर श्री कृष्ण से कहा कि आपकी माया से मैं काफी प्रभावित हूँ।

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से समस्त भारतवासियों को कवि यह सन्देश देना चाहता है कि अब हम लोगों को भी भारत की गौरवशाली परम्परा को ध्यान में रखते हुए बाह्य शक्तियों को अपनी मातृभूमि से दूर करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। तत्कालीन राष्ट्रवादी चिंतकों ने देश-भक्तों से आह्वान किया था कि अब हमें विदेशी शक्तियों द्वारा किये जा रहे अपमान का मुँह-तोड़ जवाब देने का अवसर आ गया है। हम एक साथ मिलकर अपने शत्रुओं को मार भगाने में सक्षम हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कवि राष्ट्र भक्तों को प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० दुखसेना, पूर्णियाँ
08/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

दिगंत – भाग – 2 – पद्य भाग

Date: _______ Page: _______

शीर्षक – पद

कवि – गोस्वामी तुलसीदास

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :– गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के शीर्षस्थ कवि हैं, विवेचना करें।

उत्तर :– सार्वभौम काव्य प्रतिभा से सम्पन्न भक्त महाकवि पर और इनके काव्य पर हिन्दी भाषा, साहित्य और समाज को गर्व है। हिन्दी समाज और संस्कृति पर गहरी छाप है। इनका रामचरित मानस हिन्दी का श्रेष्ठतम महाकाव्य है। इस महाकाव्य में सम्पूर्ण परम्परा, युगजीवन, समाज एवं संस्कृति की समन्वित संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है। रामचरितमानस सर्वाधिक सफल, लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट कृति है। इन्हीं गुणों के कारण गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के शीर्षस्थ कवि माने जाते हैं।

प्रश्न :– गोस्वामी तुलसीदास का जीवन अत्यन्त यातना और संघर्ष में गुजरा था, प्रकाश डालें।

उत्तर :– गोस्वामी तुलसीदास जी बचपन में ही अनाथ हो गये थे। वे साधुओं की मण्डली में शामिल हो गये। भिक्षाटन एवं देशाटन सर्वत्र करते रहे। युवावस्था में इनका विवाह भी हुआ था। वे कथावाचन से घर गृहस्थी चलाते थे। इस प्रकार रामानन्द परंपरा के गुरु ने इन्हें अपना शिष्य बनाया था। बाद में गृहस्थ जीवन से विरक्त होकर साधु जीवन में चले गये। बचपन कष्टों, अभावों में व्यतीत हुआ था। बाद में शेष जीवन लोकसंस्कृति और लोकजीवन के विविध पक्षों पर काव्य सृजन में लगाये।

प्रश्न :– " गोस्वामी जी की संवेदना गहरी और अपरिमित थी, अन्तर्दृष्टि सूक्ष्म और व्यापक थी, विवेक प्रखर और क्रान्तिकारी था" इन पंक्तियों के आधार पर उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर :– निःसन्देह गोस्वामी तुलसीदास जी संवेदना गहरी और अपरिमित थी। आन्तरिक दृष्टि पैनी और व्यापक थी विचार-चिंतन में प्रवहता, प्रखरता और ओजस्विता थी। कवि में इतिहास और संस्कृति का व्यापक परिप्रेक्ष्य बोध और लोक प्रेक्षा थी। इस युगान्तकारी बौद्धिक रचनाओं द्वारा

कवि ने ऐसा आदर्श उपस्थित किया जो अतुलनीय है। संप्रेषण और संवाद की क्षमता गोस्वामी जी में अद्भुत थी यही कारण है कि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी को हिन्दी साहित्य का सूर्य कहा जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
04.09.20